# भारतीय संस्कृति एवं नारी-विकास

पूनम तंवर*

*नारी निंदा न करो*
*नारी गुणों की खान*
*नारी ने पैदा किए*
*राम, कृष्ण, हनुमान*

आप सभी भारतीय संस्कृति से परिचित हैं। भारतीय संस्कृति इतनी महान् है कि इसकी किसी अन्य संस्कृति से तुलना भी नहीं की जा सकती। नारी प्रकृति का वह अनमोल रत्न है जो माँ के रूप में जीवन निर्मात्री है, जो बेटी, बहन, बहू, पत्नी तथा एक माँ बनकर समाज को अपना परिचय देती है। सृष्टि की आधार इस नारी का स्वयं का कोई परिचय नहीं होता, क्योंकि हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है और नारी का प्रत्येक रिश्ता पुरुष से ही संबंधित है, वह उसे अपने से हीन ही समझता है, यह एक भयानक विडंबना है। इस उत्पीड़न के बाद भी नारी इस समाज में अपनी हिम्मत तथा लगन के बल पर अपनी छवि बनाए हुए है। इतिहास साक्षी है कि किस प्रकार नारी ने दुर्गा रूप धारण कर राक्षसों का संहार किया तथा देवताओं की रक्षा की। एक अन्य उदाहरण सावित्री-सत्यवान का भी है, जिसने अपने पति के प्राण बचाए थे तथा यमराज अर्थात् मृत्यु के देवता को भी अपना निर्णय बदलने पर मजबूर कर दिया था। और ये बात जानते हुए भी कि नारी सृष्टि का आधार है, पुरुष उसकी अवहेलना करता है। यदि पुरुष के जीवन से नारी शब्द हटा दिया तो उसका जीवन नरकतुल्य हो जाएगा।

पुरुष समाज द्वारा नारी जाति के लिए अधिकतर प्रयोग किए जाने वाला वाक्य 'ये तुम्हारे बस का नहीं है', एक ऐसा वाक्य है जो कहने वाले के लिए जितना सरल है सुनने वाले के लिए उतना ही कठोर व कष्टदायक है।

यह एक ऐसा वाक्य है, जो स्त्री को सदैव चुनौती की तरह लगता है। उसे उठने की हिम्मत देता है तथा उसे प्रेरणा देता है। और शायद यही वाक्य उसे झकझोर कर रख देता है तथा मंजिल तक पहुँचाने का रास्ता बनाता है। इस वाक्य को सुनकर नारी में कुछ करने का जुनून पैदा होता है। मैं पुरुषों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले इस वाक्य को सही मानती हूँ, क्योंकि यदि वे नारी को इस प्रकार न कहें तो शायद नारी उनके पैर की जूती ही बनी रहेगी। उनके द्वारा प्रयोग किए गए इस पीड़ायुक्त वाक्य से नारी शक्ति जागृत होती है तथा उसमें कुछ कर गुजरने का जज्बा पैदा होता है।

मुझे कहीं न कहीं ये वाक्य अपने पक्ष में ही लगता है। मुझे इससे बहुत प्रेरणा मिली। क्षितिज तक पहुँचने का यह एक सुंदर द्वार है जिसे हम अपनी काबिलियत के दम पर हासिल करने का जज्बा रखते हैं।

परेशानियों से भागना आसान होता है
हर मुश्किल वक्त जिंदगी में एक इम्तहान होता है।
हिम्मत हारने वालों को कुछ नहीं मिलता जिंदगी में
मुश्किलों से लड़ने वालों के कदमों में जहान होता है।

'तुम कभी कुछ नहीं कर सकती' हमें इस वाक्य को तौहीन समझकर नहीं, अपितु चुनौती समझकर स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

* प्राचार्या, द हॉरिजन इंटरनेशनल स्कूल, पानीपत, हरियाणा।

## परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी

नारी पुरुष की सहगामी बनकर अपने परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली-भांति निभाती है। वह संतान को पैदा ही नहीं करती बल्कि जीवन भर अपनी जिम्मेदारी निभाती है। वह कभी चंडी, कभी लक्ष्मी बनकर पुरुष के साथ जीवनयापन कर मातृत्व का सुख आनन्द उठाती है, जो उसके जीवन का आधार है। उसकी जीवन रूपी गाड़ी उम्मीदों के सहारे चलती है। उसकी आँखों में कुछ सपने होते हैं जो उसे जीवित रखते हैं। वे सपने उसके बच्चों से जुड़े होते हैं। उनसे उसकी आशा की डोर बंधी होती है जो उसे मरने नहीं देती। वह अपने बच्चों में अपना सहारा ढूंढ़ती है, यदि उसके सपने साकार नहीं होते तो उसका जीवन निराशा से भर जाता है, वह भीतर तक टूट जाती है, जीवन की आशा समाप्त होती नजर आती है। एक क्षण ऐसा आता है कि वह स्वयं अपनी इस दर्दनाक स्थिति के लिए विधाता से ही सवाल पूछने लगती है कि उसे किस जन्म की सजा दी जो नारी बनाया?

नाव सद्काम की सद्वृत्ति से निष्काम खेते हैं
सदा इतिहास के पन्ने यही पैगाम देते हैं
यदि भूले से हो नारी के अपमान की पीड़ा
तभी श्री राम के घोड़े को लव-कुश थाम लेते हैं।

## आत्मविश्वास और हालात

ये दोनों शब्द जीवन के अनेक पहलुओं से गहरा संबंध रखते हैं। सफलता की मंजिल तक पहुँचने या न पहुँचने में इनकी अहम भूमिका होती है। हालात से समझौता करने वाली नारी परिस्थितियों के आगे नतमस्तक हो जाती है और उसका जीवन नरक तुल्य बन जाता है। यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है जो हमें पीछे धकेल देती है। आसानी से मिली सफलता की कोई कीमत नहीं होती। बार-बार असफल होने के बाद मिलने वाली सफलता का एक अलग ही अंदाज होता है, जो आपको पुरुषों की श्रेणी में रखकर उनके जैसा सम्मान प्रदान करता है।

## नारी नाम नारायणी

नारी को नारायणी भी कहा गया है क्योंकि नारी माँ दुर्गा की भांति अष्टभुजा स्वरूपा होती है, वह एक साथ में कई कार्य कर सकती है। स्थिति के अनुसार खुद को बदलने की प्रवृति भगवान् ने सिर्फ नारी को ही दी है। वह सेवा भाव के लिए हमेशा तत्पर रहती है। वह एक सफल संचालक की तरह घर तथा बाहर दोनों कार्य करने में सक्षम होती है। नारी से घर रोशन होता है, उसके न रहने पर घर श्मशान जैसा प्रतीत होने लगता है। ब्रह्मा जी ने स्त्री तथा पुरुष दोनों को समान मानकर ही सृष्टि की रचना की थी।

## समाज से एक अनुरोध

पुरुष और नारी दोनों एक दूसरे के लिए ही बने हैं। यदि पुरुष से नारी का सौभाग्य है तो नारी पुरुष के जीवन का आधार है। यदि दोनों एक दूसरे का सम्मान करें तथा भावनाओं की कदर करें तो कितना खुशहाल जीवन जी पाएँगे तथा समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे तथा दशरथ मांझी की तरह याद किए जाएंगे। अपने प्रेम का सबूत ताजमहल बनाकर न दें, पहाड़ों में रास्ता बनाकर दें। अपनी पत्नी को अपने चरणों में नहीं अपने बराबर में स्थान दीजिए। तभी आप एक अच्छे जीवनसाथी बन पाएँगे। एक दूसरे के लिए अपशब्द कभी न प्रयोग करें। आपके हाथ उन्हें मारने के लिए नहीं उन्हें सम्भालने के लिए उठे। जैसे पत्नी अपने पति की तरक्की से स्वयं को गौरवांवित महसूस करती है, आप भी पत्नी की श्रेष्ठता को स्वीकार करें। यदि आप एक दूसरे का सम्मान करते हुए जीवनपथ पर अग्रसर होंगे तो एक संस्कारयुक्त संतान के माता-पिता बनेंगे, जिसकी हमारे समाज तथा राष्ट्र को बहुत आवश्यकता है।

जग के काँटों को मत देखो
जैसा पथ हो चलती जाओ
शंका, भय, माया, मोह त्याग
पाषाण बनो बढ़ती जाओ
तुम नारी हो सहती जाओ।

मैं आशा करती हूँ कि आप सभी अपनी सोच को बदलने का प्रयास करेंगे तथा इस समाज तथा राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाएंगे। एक दूसरे का सम्मान करते हुए अपने रिश्तों को मजबूत बनाएंगे। शायद तभी नारी द्वारा पुरुष को लेकर देखे गए सपने सार्थक होंगे, उसे गर्व होगा अपने पिता, पति, बेटे व भाई पर। नारी का नाम ही विश्वास है। यदि हम अपने परिवार में ये सोच लागू करेंगे तो एक दिन अवश्य कामयाब होंगे। अपने लक्ष्य को इतना मजबूत बनाए कि कोई भी विचार आपको विचलित न कर सके। एक दूसरे के प्रति वफादार बनने का प्रयास करें।

गिरकर उठना दस्तूर है जिंदगी का
यही किस्सा तो मशहूर है जिंदगी का
बीते पल लौटकर नहीं आते
यही सबसे बड़ा कसूर है जिंदगी का

आपकी जिंदगी में ऐसे अनेक अवसर मिलेंगे जहाँ लोग आपको गिराने का प्रयास करेंगे। ये सिर्फ आपका निर्णय होगा कि आप उन्हें अनसुना करेंगी या सुनकर अपने लक्ष्य से भटक जाएंगी। यदि आप किसी के कहने से अपने लक्ष्य से भटक गई तो कमजोर साबित होगी। क्योंकि यदि 9999 बार असफल होने पर आप 10000वीं बार कोशिश करते हैं तो आप सफल अवश्य होंगे। इसलिए दुनिया की परवाह छोड़ अपने लक्ष्य पर अडिग रहे तथा अपने शौर्य को क्षितिज पर पहुचाएँ।

*****